JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों का तुलनात्मक अध्ययन

ज्योति द्विवेदी

शिक्षा संकाय, आर.बी.एस. कालेज, आगरा

(सम्बद्ध डॉ0 भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा – 282002)

सारांश

शिक्षक का कार्य व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र का निर्माण करना है। वह अपने असीम ज्ञान, चातुर्य मानवयिक आध्यात्मिक मूल्यों से समाज व राष्ट्र हित की भावना से ओत–प्रोत होने के कारण अपने शिष्यों को ज्ञान, मूल्य तथा उचित दिशा प्रदान कर एक मानव का सृजनकर्ता है क्योंकि मानव से ही समाज व राष्ट्र का निर्माण होता है। अच्छे नागरिकों का निर्माण अच्छे विद्यालयों पर निर्भर करता है। विद्यालय का कार्य उत्तम शिक्षक उत्पन्न करना और उत्तम शिक्षक, अच्छे शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय पर निर्भर करते है। उक्त परिप्रेक्ष्य में वह शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय उत्तम कहलाते हैं जिनके शिक्षक प्रशिक्षक योग्य तथा प्रभावशाली होते हैं।

शिक्षा, राष्ट्र की प्रगति, संस्कृति, भावना एवं संस्कार का प्रतीक है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसी विद्यालय, समाज व राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर ले जाने के लिये वहां के शिक्षक तथा शिक्षा का विकास आवश्यक है, जिससे शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व सफलता को बढ़ाया जा सके। समाज के निर्माण में शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अहम् योगदान है। उक्त सम्बन्ध में सम्बन्धित विषय का शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है। तत्सम्बन्ध में प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर निष्कर्षः यह कहा जा सकता है कि अनूसूचित जाति के अन्तमुर्खी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई भी सार्थक अन्तर प्रदर्शित नहीं करते हैं। उक्त अध्ययन के आधार पर समाज एवं सरकार की शिक्षा से सम्बन्धित नीतियों हेतु सुझाव प्रेषित किये जा सकते हैं।

प्रमुख बिन्दु – अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, शिक्षण प्रभावशीलता, शून्य परिकल्पना आदि।

1. प्रस्तावना

वर्तमान समय की विश्वविद्यालयी शिक्षा उद्देश्य विहीन तथा दिग्भ्रमित है, यह शिक्षा छात्रों को उनकी योग्यता व रूचियों के अनुरूप व्यवसाय प्रदान करने अथवा चुनाव कराने में असमर्थ है। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों में किसी चीज को सीखने के लिये लगन, इच्छा व प्रेरणा का अभाव है इसका कारण जहां एक ओर शिक्षा का संरचनात्मक स्तर तथा सरकारी नीतियां है, वहीं शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षक भी इसके लिए समाज का दृढ स्तम्भ है। एक अच्छा शिक्षक ही छात्रों में नवजीवन का संचार कर सकता है तथा उसे उत्तम मूल्यों की ओर अग्रसारित कर सकता है जैसा कि निम्न पंक्तियों में प्रतीत होता है –

"A poor teacher tells, An average teacher explains,
A good teacher demonstrates, and a real teacher inspires"

भारतीय शिक्षा आयोग (1964–66) ने भी अनुसूचित जातियों की शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ करने के लिये सुझाव दिया कि वर्तमान शिक्षा परियोजना को विस्तारित किया जाना चाहिये तथा राज्य सरकारों को इन विद्यालयों के लिये छात्रावास एवं छात्रवृत्ति की व्यवस्था अलग से करनी चाहिये। परन्तु इन सुझावों पर न तो पूर्ण रूप से चिन्तन किया गया और न ही इन्हें लागू किया गया।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) के अनुसार, हमें यह बोध है कि समग्र रूप से शिक्षा व्यवस्था की पुनर्रचना में सबसे महत्वपूर्ण कारक शिक्षक हैं उनकी व्यक्तिगत विशेषतायें, शैक्षिक योग्यतायें, शिक्षकों का अन्तर्मुखी एवं वहिर्मुखी व्यक्तित्व शिक्षण कौशल तथा विद्यालय एवं समुदाय में उनका स्थान, समुदाय पर उनके जीवन का प्रभाव उनकी शिक्षण अभिरूचि, उपलब्धि प्रेरणा, शिक्षण प्रभावशीलता एवं छात्रों के साथ उनकी अंतःक्रिया पर निर्भर करती है।

- **अन्तर्मुखी व्यक्तित्व** – इस व्यक्तित्व के लक्षण, स्वभाव, आदतें, अभिवृत्तियां और अन्य चालक बाह्य रूप में प्रकट नहीं होते, इसलिये इनको अन्तर्मुखी कहा जाता है इसका विकास बाह्य रूप में न होकर आन्तरिक रूप में होता है।
- **बहिर्मुखी व्यक्तित्व**–इस व्यक्तित्व के मनुष्य अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले मनुष्यों से विपरीत होते हैं। वहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले मनुष्यों का झुकाव वाह्य तत्वों की ओर होता है। ऐसे व्यक्ति व्यवहार कुशल, चिन्तामुक्त, सामाजिक, आशावादी, साहसिक, आक्रामक तथा लोकप्रिय प्रकृति के होते हैं।
- **शिक्षण प्रभावशीलता –**
  रेयन्श (1970) के अनुसार, ''शिक्षण उसी सीमा तक प्रभावशाली है, जिस सीमा तक शिक्षण की क्रियाएं, छात्रों में आधारभूत कौशल, अवधारण, कार्य करने की आदत, वांछित अभिवृत्ति, मूल्य निर्धारण तथा पर्याप्त वैयक्तिक समायोजन पैदा करने के अनुकूल है।

2. उद्देश्य –

(i) अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की समग्र शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
(ii) अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम 'शिक्षण हेतु पूर्व योजना एवं तैयारी' का अध्ययन करना।
(iii) अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम 'कक्षागत प्रबन्ध' का अध्ययन करना।
(iv) अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम 'विषय वस्तु का ज्ञान' का अध्ययन करना।
(v) अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम 'शिक्षक के गुण' का अध्ययन करना।

3. प्रयुक्त उपकरण

प्रदत्तों को एकत्रित करने के लिए शोधकार्य में उपकरण के रूप में निम्न प्रमापीकृत परीक्षण प्रयोग किये गये हैं–

(i) बी0एड0 विद्यार्थियों के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व को मापने के लिए **डॉ0 पी.एफ. अजीज** एवं **डॉ0 रेखा गुप्ता** (प्रकाशकः नेशनल साइकोलोजीकल कार्पोरेशन, आगरा) द्वारा निर्मित अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी सूची परीक्षण (IEI) का प्रयोग किया गया है।

(ii) बी.एड. विद्यार्थियों में शिक्षण प्रभावशीलता का मापन करने के लिए **डॉ0 (श्रीमती) उमी कुल्सुम** (प्रकाशकः साइको एजूकेशनल टैस्टिंग सेन्टर, नई दिल्ली) द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत परीक्षण शिक्षण प्रभावशीलता मापनी (KTES) का प्रयोग किया गया है।

4. अनुसंधान क्रियाविधि

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शून्य परिकल्पना का निर्माण कर प्रदत्तों का विश्लेषण कर, बिन्दुवार निम्नतालिकाओं में प्रदर्शित किया गया है–

तालिका – 4.1 – अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की समग्र शिक्षण प्रभाव शीलता के अन्तर को प्रदर्शित करती तालिका

विद्यार्थियों के समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	संयुक्त मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी	35	466.51	27.71	6.70	2.51	0.05 स्तर पर सार्थक
अनुसूचित जाति के बहिर्मुखी	65	449.67	38.67			

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों में समग्र शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान (M=466.51) अनुसूचित जाति के बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की समग्र शिक्षण प्रभावशीलता के मध्यमान (M=449.67) से अधिक है। सांख्यिकीय दृष्टि से इन दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर में क्रान्तिक अनुपात 2.51 पाया गया जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना **"अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की समग्र शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है"** को अस्वीकार किया जाता है। उपरोक्त परिणाम से यह स्पष्ट है कि दोनों समूह शिक्षण प्रभावशीलता के सम्बन्ध में असमानता प्रदर्शित करते हैं। अर्थात् अनुसूचित जाति के प्रशिक्षणार्थियों में अन्तर्मुखी विद्यार्थी, जो कक्षा में अपने विचारों को प्रकट नहीं करते हैं, की तुलना में अनुसूचित जाति के बहिर्मुखी विद्यार्थी कक्षा शिक्षण में कम प्रभावी हैं।

उक्त परिणाम यह भी प्रदर्शित करते हैं कि अच्छे प्रभावशाली शिक्षकों के लिये बहिर्मुखी होना व्यक्तित्व का आवश्यक गुण कहा जा सकता है वही कह प्रभावशाली शिक्षक हो सकते हैं। अर्थात् ये आवश्यक नहीं कि एक प्रभावशाली शिक्षक जो अपनी बात को छात्रों के सम्मुख स्पष्ट तथा प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सके, प्रभावशाली शिक्षक होगा, अपितु अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के शिक्षक भी प्रभावशाली शिक्षक बनते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि प्रभावशाली शिक्षक बनने के लिये शिक्षकों में विषयवस्तु का ज्ञान, विद्यार्थियों से मधुर सम्बन्ध एवं सीखने का वातावरण भी प्रभावी कारक होते हैं।

तालिका – 4.2 – अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शिक्षण हेतु पूर्व योजना एवं तैयारी के अन्तर को प्रदर्शित करती तालिका

विद्यार्थियों के समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	संयुक्त मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी	35	85.08	6.01	1.37	1.57	असार्थक
अनुसूचित जाति के बहिर्मुखी	65	82.93	7.36			

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों में शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शिक्षण हेतु पूर्व योजना एवं तैयारी का मध्यमान (M=85.08) अनुसूचित जाति के बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शिक्षण हेतु पूर्व योजना एवं तैयारी के मध्यमान (M=82.93) से अधिक है। सांख्यिकीय दृष्टि से इन दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर में क्रान्तिक अनुपात 1.57 पाया गया जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर भी सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना **"अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शिक्षण हेतु पूर्व योजना एवं तैयारी में कोई सार्थक अन्तर नहीं है"** को स्वीकार किया जाता है। उपरोक्त सांख्यिकीय परिणाम से यह स्पष्ट है कि दोनों समूह शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शिक्षण हेतु पूर्व योजना एवं तैयारी जैसे विषय ज्ञान में विभिन्न शिक्षण उपागमों के प्रयोग इत्यादि में लगभग समान हैं अर्थात् अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थी शिक्षण हेतु पूर्व योजना एवं तैयारी के सम्बन्ध में समान क्रियाशील रहते हैं।

तालिका – 4.3 – अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम कक्षागत प्रबन्ध के अन्तर को प्रदर्शित करती तालिका

विद्यार्थियों के समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	संयुक्त मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी	35	103.88	8.70	1.99	0.86	असार्थक
अनुसूचित जाति के बहिर्मुखी	65	102.16	10.81			

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों में शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम कक्षागत प्रबन्ध का मध्यमान (M=103.88), अनुसूचित जाति के बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम कक्षागत प्रबन्ध के मध्यमान (M=102.16) से अधिक है। सांख्यिकीय दृष्टि से इन दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर में क्रान्तिक अनुपात 0.86 पाया गया जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर भी सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना **"अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम कक्षागत प्रबन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है"** को स्वीकार किया जाता है। उपरोक्त परिणाम से यह स्पष्ट है कि दोनों समूह शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम कक्षागत प्रबन्ध में लगभग समान हैं अर्थात् अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थी कक्षागत प्रबन्ध के सम्बन्ध में समान क्रियाशील रहते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ये विद्यार्थी भविष्य में जब शिक्षक बनेंगे तो कक्षा अनुशासन, प्रभावी सम्प्रेषण, विद्यार्थियों को प्रेरित करने एवं पठन–पाठन व्यवस्था के सम्बन्ध में समान प्रभावी सिद्ध होंगे।

तालिका – 4.4 – अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम विषय वस्तु का ज्ञान के अन्तर को प्रदर्शित करती तालिका

विद्यार्थियों के समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	संयुक्त मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी	35	56.22	2.56	0.70	4.04	0.01 स्तर पर सार्थक
अनुसूचित जाति के बहिर्मुखी	65	53.41	4.38			

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों में शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम विषय वस्तु के ज्ञान का मध्यमान (M=56.22) अनुसूचित जाति के बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम विषय वस्तु का ज्ञान के मध्यमान (M=53.41) से अधिक है। सांख्यिकीय दृष्टि से इन दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर में क्रान्तिक अनुपात 4.02 पाया गया जो कि सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना **"अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम विषय वस्तु का ज्ञान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है"** को अस्वीकार किया जाता है। उपरोक्त परिणाम से यह स्पष्ट है कि दोनों समूह शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम, विषय वस्तु का ज्ञान के सम्बन्ध में समान रूप से क्रियाील नहीं हैं अर्थात् अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी विद्यार्थी, अनुसूचित जाति के बहिर्मुखी विद्यार्थियों से शिक्षण प्रभावीशीलता के आयाम विषय वस्तु का ज्ञान के साथ–साथ सम्बन्धित शीर्षक की गहनता एवं व्याख्या के सम्बन्ध में अधिक प्रभावी हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी विद्यार्थी बी.एड. प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् जब शिक्षक बनेंगे तो अनुसूचित जाति के बर्हिमुखी विद्यार्थियों की तुलना में विषय वस्तु ज्ञान एवं पाठन क्रियाओं में अधिक प्रभावी सिद्ध होंगे।

तालिका – 4.5 – अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शिक्षक के गुण के अन्तर को प्रदर्शित करती तालिका

विद्यार्थियों के समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	संयुक्त मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी	35	131.57	6.63	1.80	2.34	0.05 स्तर पर सार्थक
अनुसूचित जाति के बहिर्मुखी	65	127.35	11.37			

उपरोक्त सारणी के अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों में शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शिक्षक के गुण का मध्यमान (M=131.57), अनुसूचित जाति के बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शिक्षक के गुण के मध्यमान (M=127.35) से अधिक है। सांख्यिकीय दृष्टि से इन दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर में क्रान्तिक अनुपात 2.34 पाया गया जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना **"अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शिक्षक के गुण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है"** को अस्वीकार किया जाता है। उपरोक्त परिणाम से यह स्पष्ट है कि दोनों समूह शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम, शिक्षक के गुण में असमान हैं अर्थात् अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी विद्यार्थी शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम, शिक्षक के गुणों जैसे व्यवहार एवं सांमजस्य में दूसरे वर्ग से बेहतर हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी विद्यार्थी भविष्य में जब शिक्षक बनेंगे तो वह अनुसूचित जाति के बहिर्मुखी विद्यार्थियों से अधिक व्यवहार कुशल, कक्षा में बेहतर सम्बन्ध बनाने एवं व्यक्तित्व निर्माण में परिपूर्ण होंगे तथा समाज के लिये प्रभावी आदर्श प्रस्तुत करेंगे।

तालिका – 4.6 – अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम अर्न्तवैयक्तिक सम्बन्ध के अन्तर को प्रदर्शित करती तालिका

विद्यार्थियों के समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	संयुक्त मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी	35	89.62	5.57	1.48	3.95	0.01 स्तर पर सार्थक
अनुसूचित जाति के बहिर्मुखी	65	83.78	9.18			

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों में शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम अर्न्तवैयक्तिक सम्बन्ध का मध्यमान (M=89.62), अनुसूचित जाति के बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम अर्न्तवैयक्तिक सम्बन्ध के मध्यमान (M=83.78) से अधिक है। सांख्यिकीय दृष्टि से इन दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर में क्रान्तिक अनुपात 3.95 पाया गया जो कि सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना **"अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम अर्न्तवैयक्तिक सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है"** को अस्वीकार किया जाता है। उपरोक्त परिणाम से यह स्पष्ट है कि दोनों समूह शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम अर्न्तवैयक्तिक सम्बन्धों में असमानता प्रदर्शित करते हैं अर्थात् अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी विद्यार्थी अर्न्तवैयक्तिक सम्बन्धों के मामलों में अधिक प्रभावी हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भविष्य में यह विद्यार्थी शिक्षक के रूप में भी आपस एवं समाज के घटकों के साथ बेहतर सम्बन्ध प्रदर्शित करेंगे तथा अपने अभिभावकों, व्यवसाय के प्रति भी एक प्रभावी व्यक्ति के रूप में व्यवहार करते हुए प्रतीत होंगे अर्थात अर्न्तवैयक्तिक सम्बन्धों पर जाति वर्ग का प्रभाव नहीं पड़ता है अपितु व्यक्तित्व ही मुख्य भूमिका अदा करता है।

सन्दर्भ सूची

1. **केन एस0** : "दि पावर ऑफ इन्ट्रोवर्ट इन ए वर्ल्ड दैट कान्ट स्टॉप टॉकिंग", एन.वाई. क्राऊन (2012)।
2. **तिवारी, के.पी.** : "ए स्टडी ऑफ पर्सनैलिटी केरेक्टरिस्टिक्स, पर्सनल वैल्यूज, अचीवमेन्ट मोटीवेशन एण्ड वोकेशनल इन्ट्रस्ट ऑफ एस.सी. एण्ड नॉन एस.सी. स्टूडेन्ट्स बिलांगिंग टू रूरल एण्ड अरबन ऐरियाज", पीएच.डी. (शिक्षा), डॉ0 बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा (2012)।
3. **दीक्षित, एम.** : "ए स्टडी ऑफ पर्सनैलिटी केरेक्टरिस्टिक्स ऑफ एस.सी. एण्ड नॉन एस.सी. साइंस स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर अचीवमेन्ट मोटीवेशन एण्ड होम एन्वायरनमेन्ट", पीएच.डी. (शिक्षा), डॉ0 बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा (2012)।
4. **रॉनल बी. किंग एवं डेनिस एम. मैक्लेनरे** : "सोषल गोल्स इन अचीवमेन्ट मोटीवेषन रिसर्च : एक्साम्पल्स फ्रॉम द फिलीपीन्स", ऑनलाइन रीडिंग इन साइकॉलोजी एण्ड कल्चर, हॉंगकॉंग (2012)।
5. **अम्बिली रमेष** : "न्यू टीचिंग, एन एफिषियेन्ट टैकनिक फॉर लर्निंग इफैक्टिव टीचिंग", जनरल ऑफ रिसर्च मेड. साइंस, वॉल्यूम–ट.18(2), पृष्ठ 158–163 (2020)।

****